टोंक जिले के सन्दर्भ में मानव संसाधन–प्रतिरुप एवं औचित्य

*डॉ. विनीता तँवर
**किशन लाल पुरी

शोध सारांश

प्रत्येक प्रदेश के आर्थिक एवं क्षेत्रीय विकास को सर्वाधिक प्रभावित ही 'मानव संसाधन' करता है क्योंकि एक ओर तो यह प्राकृतिक संसधनों का उपयोग करता है तथा वहीं दूसरी ओर वह स्वयं भी एक संसाधन है जो न केवल उत्पादक प्रक्रिया को सक्रिय करता है अपितु संसधनों का उचित उपयोग कर 'जीवन की गुणवता' को सुधरता है। यह सनातन सत्य है कि मानव संसाधन एवं अन्य संसधनों के 'उपयुक्त संयोग' से ही विकास सम्भव होता है। महान् भूगोलवेता 'फेब्रे' ने भी अनुसमर्थन किया है कि मानव सब सम्भावनाओं का स्वामी है (MAN IS THE MASTER OF ALL PSOSSIBILITIES) । अतः मानव का संसाधन के रुप में विभिन्न पहलुओं से अध्ययन (गुणात्मक –मात्रात्मक) करना, विश्लेषण एवं मूल्यांकन करना सभी शोधकर्त्ताओं के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य है। जिससे समस्याओं का निदान, सामाजिक और आर्थिक निर्णयों का प्रादेशिक अनुप्रयोग हो सके तथा क्षेत्रीय विकास प्रगतिमान बना रहे। इसी को ध्यान में रखते हुए मानव –संसाधन प्रतिरुप राजस्थान राज्य के टोंक जिला का आंकलन किया गया है।

उपरलिखित विषयान्तर्गत प्रस्तुत शोध–सारांश में टोंक जिले में संसाधनों की उपलब्धता एवं प्रादेशिक नियोजन के उपभाग में रुप में टोंक जिले की जनसंख्या संरचना का अध्ययन किया गया है जिसमें सन् 2011 के नवीनत्तम ऑकडों का तुल्नाम्मक प्रस्तुतीकरण किया गया है। इसके अन्तर्गत विभिन्न जनगणना वर्षो में हुई जनसंख्यात्मक संरचना का अध्ययन सारणीयन तथा ग्राफीय विधियों के तुलनात्मक प्रारुप में किया जायेगा। जिससें वर्तमान परिपेक्ष्य में जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट किया जा सकें। इस शोध सारांश में टोंक जिले की कुल जनसंख्या, जनसंख्या वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, लिंगानुपात, ग्रामीण–नगरीय जनसंख्या इत्यादि का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है जो बदलते मानवीय संसाधन प्रतिरुप को को स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध होगा।

प्रस्तुत शोध सारांश के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध सारांश के निम्नलिखित उद्देश्य है।

1. टोंक जिले में जनसंख्या संरचना की प्रवृत्ति।
2. टोंक जिले में जनसंख्या का स्थानिक वितरण।
3. टोंक जिले में जनसंख्या वृद्धि का स्थानिक प्रतिरुप।

शोध विधितन्त्र एवं ऑकड़ो का स्त्रोत

उपरलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ऑकड़े विभिन्न जिला जनगणना पुस्तिका, जिला–सांख्यिकी रुप रेखा से लिये गये है। जनगणना के अतिरिक्त ऑकड़े जिला सांख्यिकी कार्यालय, कृषि एवं सिंचाई विभाग से लिए गये है। टोंक जिले से सम्बद्ध सूचनाएँ जिला गजेटियर से ली गई है। विषयक मानचित्र के द्धारा जनसंख्या के स्थानिक वितरण को स्पष्ट किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

नवाबों का शहर नाम से विख्यात टोंक ग्लोब पर 25° 41'N से 26° 24'N आक्षाशों तथा 75° 19'E से 75° 16'E देशान्तरीय विस्तार में अवस्थित है जो उत्तरी–गोलार्द्ध में फैला है। सापेक्ष स्थिति की दृष्टि से टोंक की सीमा उत्तर–पूर्व में दौसा, पूर्व में सवाई माधोपुर दक्षिण–पूर्व में कोटा, दक्षिण में बूंदी, दक्षिण–पश्चिम में भीलवाड़ा, पश्चिम में अजमेर और उत्तर दिशा में जयपुर जिलों द्वारा आबद्ध है। यह जयपुर मुख्यालय से लगभग 100 किमी. दुर राष्ट्रीय राजमार्ग–12 (NH-12) पर विस्तृत है। चम्बल की सहायक बनास नदी टोंक जिलें को उत्तरी एवं पूर्वी दो भागों में विभाजित करती है।

प्रशासनिक दृष्टि से टोंक जिले में टोंक एवं मालपुरा दो उपखण्ड है। इसमें टोंक, निवाई, मालपुरा, टोडाराय सिंह, देवली और अलीगढ़ पंचायत समितियॉ है। साथ ही इसमें टोंक , मालपुरा, टोडाराय सिंह, देवली, निवाई उनियारा एवं पीपलू कुल सात तहसीले है। इसमें एक नगर परिषद् तथा पॉच नगर पालिकाएं है। टोंक जिला मुख्यालय पर कसरे–इल्म अवस्थित है जो एशिया महाद्विप का सबसे बड़ा अरबी –फारसी शोध संस्थान है।

जनसंख्या का वितरण–प्रतिरुप

टोंक जिला मैदानी क्षेत्रीय प्रतिरुप में सम्मिलित है जिसकी औसत वार्षिक वर्षा 60 सेमी है तथा उपार्द्र जलवायु प्रदेश में फैला है कि सन् 2011 में कुल जनसंख्या 1421326 है जिनमें पुरुष 728136 एवं महिलायें 693190 है। टोंक जिले की विगत दशकीय जनसंख्या इस प्रकार वितरित है–

सन्	राजस्थान	टोंक
1951	15970744	406921
1961	20155602	497729
1971	25795806	625830
1981	34261862	783635
1991	44005990	975006
2001	56507188	1211671
2011	68548437	1421711

निष्कर्ष

उपरलिखित तथ्यान्वेषण से स्पष्ट है कि टोंक जिले में जहाँ 1951 मे 406921 जनसंख्या थी वही 1991 में बढकर 975006 हो गयी तथा बढती चिकित्सकीय सुविधाओं एवं परिवार नियोजन में अनुसरण के कारण सन् 2011 में 1421711 हो गयी जो इसकी महत्ता को स्वयं सिद्ध करती है।

जनसंख्या वृद्धि दर

दो समय बिन्दुओं के बीच की जनसंख्या की संरचना में हुए परिवर्तन को ही जनसंख्या वृद्धि कहते है जो धनात्मक एवं ऋणात्मक दो प्रकार की होती है। ऋणात्मक वृद्धिदर 1911–21 के दशक में रही उसके बाद इसका स्वरूप

आरोही–अवरोही क्रम में रहा। यह सन् 2011 में 17.33 % रही है जो लगभग राष्ट्रीय औसत (17.64 %) के बराबर है का विवरण इस प्रकार है–

सन	1951	1961	1971	1981	1991	2001	2011
राजस्थान	15.2%	26.2 %	27.8%	32.97%	28.44%	28.41%	21.30%
टोंक	23.38%	22.31%	25.74%	25.21%	24.42%	24.27%	17.33%

निष्कर्ष

उपरलिखित तथ्यों के अध्ययन से यह कह सकते है कि टोंक जिले की जनसंख्या वृद्धि जो 1951 में 23.38% थी वहीं बढकर 1991 में 24.42% हो गयी परन्तु परिवार नियोजन की सफलता के कारण क्रमिक रुप में घटकर यह 2011 में 17.33% हो गयी जो मानवीय संसाधन के सतत् पोषणीय विकास का सुचक है। अतः मानवीय ससांधन का अध्ययन वर्तमान संदर्भ में समीचीन है।

ग्रामीण – नगरीय जनसंख्या

कृषि, पशुपालन आदि से सम्बद्ध कार्यशील जनसंख्या को ग्रामीण वर्ग में रखा गया है जो टोंक में सन् 2011 में कुल 958503 थी जो कुल जनसंख्या की 77.65% है। सर्वाधिक वृद्धिदर उनियारा तहसील में तथा न्यूनत्तम वृद्धि दर टोंक तहसील में दर्ज की गयी।

उधोग, परिवहन, व्यापार जैसी क्रिया से सम्बद्ध लोगो को नगरीय जनसंख्या कहते है जो टोंक में सन् 2011 में 22. 35% रही। यह सर्वाधिक निवाई तहसील में न्युनत्तम मालपुरा तहसील में दर्ज की गई।

निष्कर्ष :– उपरलिखित ग्रामीण – नगरीय प्रतिरुप का सारंश प्रस्तुत करने पर स्पष्ट हो रहा है कि टोंक जिले में जहॉ 1951 में 23.38 % जनसंख्या नगरीय क्रियाओं अर्थात द्वितीयक, तृतीयक एवं चतुर्थक आर्थिक क्रियाओं में संलग्न थी वहीं पर 76.62 % जनसंख्या प्राथमिक आर्थिक क्रिया अर्थात कृर्षि, पशुपालन, मछली पालन जैसे कार्यो में संलग्न थी जिससे निष्कर्ष निकलता है कि अभी भी आर्थिक उन्नति के लिए प्राथमिक से उत्तरोत्तर आर्थिक क्रियाओं में मानवीय प्रस्थान की अपार सम्भावना है अतः सिद्ध है कि टोंक में नगरीय क्रियाओं वृद्धि करके आर्थिक उन्नति को सार्थक किया जा सकता है

लिंगानुपात

जनसंख्या की संरचना में स्त्री एवं पुरुष के अनुपात को लिंगानुपात कहते है जो सन् 2011 में टोंक में 952 रहा अर्थात 1000 पुरुषों की तुलना में स्त्रियों का अनुपात 952 है। यह नगरीय क्षेत्र में 985 तथा ग्रामीण क्षेत्रों में 943 रहा। इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

सन्	1991	2001	2011
राजस्थान	910	922	928
टोंक	923	934	952

निष्कर्ष

लिंगानुपात के अध्ययनोपरान्त यह सांराश सामने आया है कि टोंक जिले में ग्रामीण क्षेत्र में बढती सामाजिक कुरीतियों पर रोक लगाकर एवं स्त्री साक्षरता को प्रायोगिक स्तर पर बढाकर इस लिंगानुपात में वास्तविक रुप से कमी लाई जा सकती है जो कि सामाजिक सन्तुलन के साथ ही साथ सामाजिक कुरीतियों पर अंकुश लगा पायेगी अतः सारंश रुप में कह सकते है की सामाजिक सामंजस्य की स्थापनार्थ लिंगानुपात को सन्तुलित करना परमावश्यक है जो टोंक के संदर्भ में अभी प्राप्त करना शेष है।

साक्षरता

किसी भी मान्य लिपि में पढ़ना, लिखना एवं समझना जिस व्यक्तिव को आता है के गुण का साक्षरता कहते है जिसकी दृष्टि से टोंक में सन् 2011 में कुल 749651 साक्षर थे जिनमें पुरुष 478329 एवं महिलाओं 271330 थी। यह कुल जनसंख्या का 62.46% हैं जो पुरुषों में 78.27% तथा महिलाओं में 46.01% रहा का विवरण इस प्रकार है–

सन्	1991	2001	2011
राजस्थान	38.61%	60.41%	67.06%
टोंक	33.67%	51.97%	62.46%

निष्कर्ष

उपरवर्णित सांख्यिकीय विवरण से स्वतः स्पष्ट है कि टोंक जिले में जहां 1991 में 33.67 % साक्षरता थी वहीं बढती जागरुकता एवं प्रोढ साक्षरता की बदोलत 2011 में बढकर 62.46% हो गयी जो सिद्ध करती है कि साक्षरता में सुधार हो रहा है परन्तु अभी स्त्री–पुरुष का अनुपात प्राप्त करना बाकी है जो निरंतर प्रयास से प्राप्त की जा सकती है।

जनसंख्या घनत्व

धरातल की क्षेत्रीय इकाई पर निवासित जनसंख्या के अनुपात को ही जनसंख्या धनत्व कहते है। किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या की संरचना को उच्चावच, सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक कारक प्रभावित करते है। इसी क्रम में सन् 2011 में टोंक का औसत धनत्व 198 व्यक्ति प्रति वर्गकिमी रहा जो राजस्थान में 19वें क्रम पर है का तुलनात्मक विवरण इस प्रकार है– (व्यक्ति प्रति वर्ग किमी)

सन्	1991	2001	2011
राजस्थान	129	165	200
टोंक	138	168	198

निष्कर्ष

जनसंख्या घनत्व भू–भार एवं कायिक घनत्व को सिद्ध करता है अतः उपरोक्त दिये गये सांख्यिकीय विवरण से यह स्पष्ट हो रहा है कि टोंक में जहां 1991 में 138 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी था वहीं सन् 2011 में सामान्यतः बढकर 198 व्यक्ति प्रतिवग किमी हो गया अतः सिद्ध है कि अगर जनघनत्व का गुणात्मक विकास किया जाये तो सन्तुलित विकास अपेक्षनीय है।

अनुसूचित जाति एवं जनजाति जनसंख्या

टोंक जिले में मुसलमान ,रैगर, चमार, खटीक, हरिजन जैसी अनुसूचित एवं मीणा जैसी जनजातियां निवसित है जो इसके सामाजिक और आर्थिक विकास को प्रत्यक्षतः प्रभावित करती है। सन् 2011 में टोंक में कुल अनुसूचित जातीय संख्या 287903 एवं अनुसूचित जनजातीय संख्या 178207 थी। मुसलमान जनसंख्या सर्वाधिक टोंक एवं मालपुरा तहसीलों में अवस्थित है जो इसकी सामाजिक तथा आर्थिक संरचना को प्रभावित करती है।

तथ्य	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
टोंक	287903	178207
राजस्थान	12221593	9238534

निष्कर्ष

किसी भी समाज का सामाजिक रुप से पिछडना आर्थिक विकास में बाधक होता है जो टोंक जिले के सन्दर्भ में अनुसूचित जाति लगभग 20.26 % है तो अनुसूचित जनजाति 12.54% है अर्थात इस वर्ग को समाज कि विकसित धारा से जोड दिया जाये तो सामाजिक विकास में उत्तरोत्तर अपेक्षनीय विकास को प्राप्त किया जा सकता है।

शोध –सारंश का निष्कर्ष

टोंक जिले में मानव संसाधन के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष बिन्दु प्रकट हुये है–

1. टोंक जिले की जनसंख्या तीव्र गति से बढ रही है।
2. टोंक जिले में उच्च जनसंख्या घनत्व पाया जाता है।
3. टोंक जिले की जनसंख्या मुख्यतः कृषि पर निर्भर है।
4. टोंक जिले में गैर कृषि व्यवसाय सीमित है।
5. टोंक जिले में जनसंख्या में गुणात्मक पिछडापन है।

सुझाव

टोंक जिले के मानव संसाधनों के समुचित समायोजन के लिए निम्नलिखित सुझाव समीचीन होंगे

1. वैज्ञानिक एवं मानवीय प्रयासों से जनसंख्या को सीमित करना।
2. खनिज जैसे गैर कृषि कार्यो को बढावा देना।
3. हस्तलिखित सम्बद्ध उघोगों का विकास करना।
4. उच्च शिक्षा एवं तकनीकी के लिए नागरिकों का उद्‌बोधित करना।
5. सरकारी नीतियों को क्रियान्वित करना।

*शोध निर्देशिका
राजकीय शाकम्भरी पी.जी. कॉलेज
साँभर लेक
**शोधार्थी
भूगोल विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

संदर्भ सूची

टोंक जिले में मानव संसाधन के रुप में प्रस्तुत इस शोध–साराशं की सामग्री एकत्र करने में निम्नलिखित मान्य स्त्रोतों का अध्ययन किया गया है।

1. जिला सांख्यिकी रुप–रेखा, जिला–टोंक।
2. जिला गजेटियर, जिला–टोंक।
3. जिला जनगणना पुस्तिका जिला–टोंक।
4. राजस्थान की आर्थिक सवैक्षण समीक्षा।
5. कौशिक, एस.डी. (1992):– संसाधन भूगोल, रस्तोगी एण्ड संस कम्पनी, मेरठ।
6. पण्डा, डॉ. बी.सी (1998):– जनसंख्या भूगोल मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
7. प्रसाद, डॉ. गायत्री (2000):– सांस्कृतिक भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
8. लोढा, डॉ.राजमल (2009):– औधोगिक भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर